अध्याय 5

egktuin dky

(600 ईसा पूर्व से 325 ईसा पूर्व तक)

भारत में 600 ईसा पूर्व अर्थात् आज से लगभग 2600 वर्ष पहले के काल को महाजनपद काल कहा जाता है। इस काल के भारत में अनेक छोटे–बड़े राज्य एवं गणराज्य बने। इस समय अनेक नए धार्मिक विचारों की भी शुरुआत हुई। साथ ही खेती, व्यापार, उद्योग–धंधे एवं नगरों का भी विकास हुआ। इसी प्रकार राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में भी इस काल में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए। ये बदलाव किस प्रकार के थे और किन कारणों से आए, इस पाठ में हम जानने की कोशिश करेंगे।

पिछले पाठ में हमने पढ़ा था कि गंगा–यमुना नदियों के मैदान में खेती होने लगी थी तथा वहाँ कई जनपद बन गए थे।

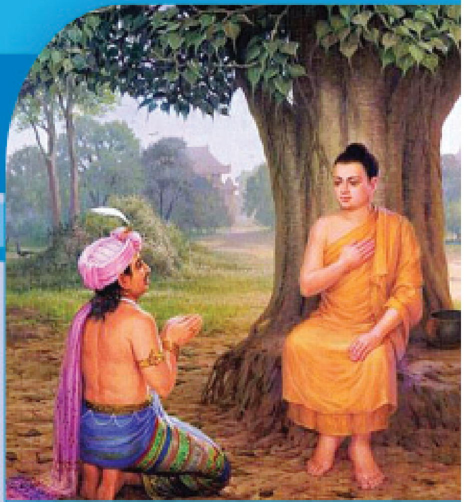

चित्र–5.1

1. जनपद किसे कहते है?
2. जनपदों में समाज कितने भागों में बँटा हुआ था?

इस काल में लोगों के जीवन में क्या–क्या परिवर्तन आए होंगे?

महाजनपद

धीरे–धीरे इन जनपदों का तेजी से विकास होने लगा। गंगा–यमुना के उपजाऊ मैदान में फसलें अच्छी होती थीं। दक्षिण बिहार (वर्तमान झारखंड) क्षेत्र में मिलने वाले खनिजों (मुख्य रुप से लोहा) से औज़ार एवं हथियार बनाए जाने लगे। इससे इस क्षेत्र के जनपदों की शक्ति बढ़ी तथा यहाँ उद्योग–धंधों का भी काफी विकास हुआ। उद्योग–धंधों के विकास के साथ यहाँ नगर भी बसने लगे। वे अपनी ताकत और आय बढ़ाना चाहते थे। परिणाम यह हुआ कि कुछ शक्तिशाली जनपदों ने दूसरे जनपदों को जीत लिया। इन्हीं शक्तिशाली और बड़े जनपदों को 'महाजनपद' कहा गया।

इस प्रकार 600 ईसा पूर्व के भारत में अनेक जनपदों एवं महाजनपदों का उदय हो चुका था। इनमें से कुछ राजतंत्र एवं अन्य गणतंत्र शासनवाले थे। उस समय की बातें बताने वाले ग्रंथों के अनुसार उन दिनों पूरे भारत में 16 महाजनपद थे। ये सभी महाजनपद प्रभावशाली थे।

इन महाजनपदों में से अंग, काशी, कोसल, मगध आदि में ''राजतंत्र–शासन'' की व्यवस्था थी। इस व्यवस्था में शासन राजा द्वारा किया जाता था। इसमें राजा का पद वंशानुगत होता था अर्थात राजा के मरने के बाद उसका बड़ा बेटा राजा बनता था।

याद रखिए

जन – एक वंश के लोगों का कबीला।

जनपद – एक जन के लोगों के बसने एवं खेती करने का इलाका।

महाजनपद – शक्तिशाली एवं बड़े जनपद।

भारत के मानचित्र 5.1 में गंगा नदी के किनारे बसे महाजनपदों को पहचानिए।

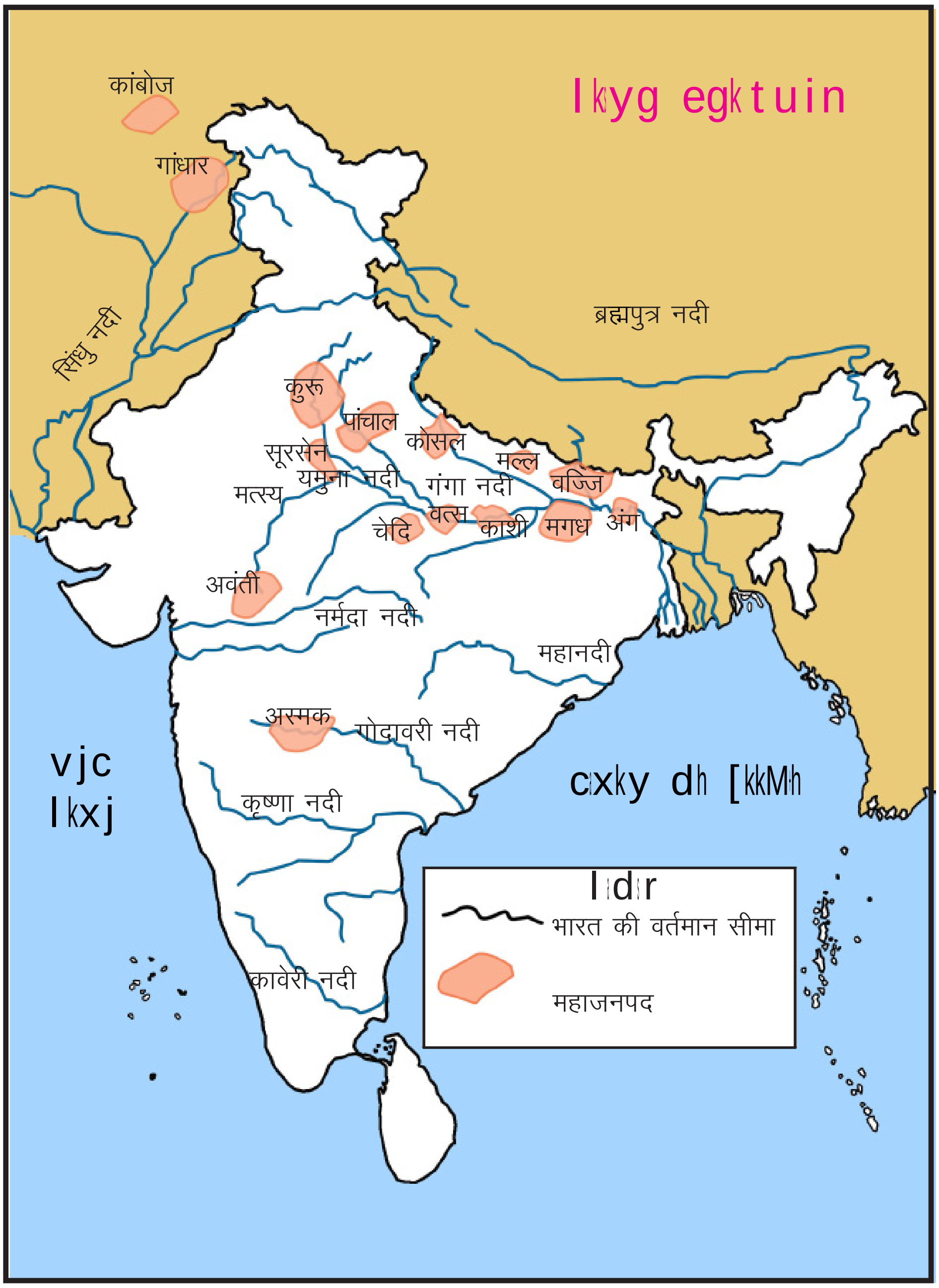

ekufp= 5-1

लेकिन वज्जि (वैशाली), शाक्य (कपिलवस्तु), मल्ल आदि महाजनपदों में गणतंत्र शासन की व्यवस्था थी। गणतंत्र शासन व्यवस्था में शासन एक ही वंश के पुरुषों की एक सभा के द्वारा किया जाता था। यह सभा अपने सदस्यों में से किसी एक को कुछ समय के लिए राजा भी चुन लेती थी। राजा का यह पद वंशानुगत नहीं होता था। गणराज्य के अंतर्गत आनेवाले दूसरे वर्ग के लोग, महिलाएँ, दास, व्यापारी आदि का शासन चलाने में कोई योगदान नहीं लिया जाता था। गणतंत्र शासन की यह व्यवस्था कुछ छोटे गणतंत्रों में बहुत लंबे समय तक चलती रही। मगर वज्जि जैसे कुछ महत्वपूर्ण गणराज्यों का अन्त मगध जैसे शक्तिशाली राज्यों के साम्राज्य–विस्तार की नीति के कारण हो गया।

याद रखिए

1. वंशानुगत – पिता से पुत्र को मिलनेवाला पद है।
2. राजतंत्र शासन – वह व्यवस्था जिसमें शासन किसी राजा या रानी द्वारा वंशानुगत रूप से किया जाता है।
3. गणतंत्र शासन – वह व्यवस्था, जिसमें शासन किसी चुने हुए व्यक्ति द्वारा एक निश्चित समय के लिए किया जाता है।
4. राज्यों एवं गणराज्यों में मुख्य अंतर क्या था?
5. आज की शासन–व्यवस्था और उस समय के गणराज्यों की शासन व्यवस्था में क्या अंतर है?

मगध साम्राज्य का उदय

544 ईसा पूर्व से 323 ईसा पूर्व तक महाजनपदकाल कहा जाता है। इस काल की शुरूआत में गंगा नदी की घाटी में कोसल, वत्स, और मगध सबसे शक्तिशाली राज्य थे। अवंति एक अन्य शक्तिशाली राज्य था, जिसकी राजधानी उज्जैन थी। ये अपने–अपने राज्यों की सीमाओं को बढ़ाने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। लेकिन अंत में सबसे शक्तिशाली राज्य के रूप में मगध साम्राज्य का उदय हुआ, जिसमें अनेक राज्य एवं गणराज्य हुए। राज्य को शक्तिशाली बनाने में वहाँ के राजा एवं जनता के अलावा वहाँ की प्राकृतिक संपदा का भी काफी योगदान रहा। मगध की भूमि बहुत उपजाऊ थी, इससे कृषि–उपज अच्छी होने लगी उसके दक्षिण क्षेत्र में लोहा प्रचुर मात्रा में मिलता था। इससे औजार और हथियार बनाए जाने लगे। इस प्रकार प्राकृतिक संपदा ने मगध को शक्तिशाली बनाया ।

बिंबिसार

बिंबिसार मगध का पहला प्रमुख राजा था। उसने एक शक्तिशाली सेना बनाई। उसने सेना एवं नीति दोनों से काम लेकर मगध को शक्तिशाली बनाना शुरू किया। उसने सबसे पहले कोसल की राजकुमारी से विवाह किया। इससे दहेज के रूप में उसे काशी का राज्य मिला। इसके बाद वैशाली की राजकुमारी से विवाह कर, वहाँ का समर्थन पाया। उसने दूर के जनपदों से मित्रतापूर्ण संबंध रखे। लेकिन अपने पड़ोसी जनपद पर चढ़ाई करके उसकी राजधानी चंपा पर अधिकार कर लिया।

बिंबिसार की शासन व्यवस्था

बिंबिसार एक योग्य शासक था। उसने राजगृह को अपनी राजधानी बनाया जो चारों तरफ से पहाड़ियों द्वारा सुरक्षित थी। वह अपने राज्य की शासन व्यवस्था पर कड़ी नजर रखता था। उसके समय में अपराधियों को कठोर सजा दी जाती थी। उसने किसानों और व्यापारियों से नियमित कर वसूल करने की व्यवस्था बनाई। उन करों से सेना, कर्मचारी एवं राजा का खर्च चलता था। लेकिन उसके ही पुत्र अजातशत्रु ने उसकी हत्या कर दी और स्वयं राजा बन गया।

1. बिंबिसार ने मगध को कैसे शक्तिशाली बनाया ?
2. बिंबिसार अपनी प्रजा से कर क्यों लेता था ?
3. मगध की प्राकृतिक संपदा का उसके विकास में क्या योगदान था ?

अजातशत्रु

राजा बनने के बाद अजातशत्रु ने भी अपने पिता की नीति को अपनाया तथा मगध का विस्तार किया। उसने वज्जि गणतंत्र में फूट डालकर उसे अपने राज्य में मिला लिया। उसके शासन काल में राजगृह के निकट सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध सम्मेलन हुआ था।

अजातशत्रु के बाद मगध में और कई राजा हुए जिन्होंने मगध राज्य का विस्तार किया।

नंद वंश

इस वंश का पहला शासक महापद्मनंद था। उसने अपनी विशाल सेना के बल पर उत्तर भारत के कई राज्यों तथा दक्षिण में कलिंग (उड़ीसा) को जीत लिया। इस समय तक मगध राज्य विस्तृत होकर साम्राज्य का रुप ले लिया था। नंद वंश का आखिरी राजा धनानंद था। वह कर वसूलते समय अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। इसलिए प्रजा उससे काफी दुखी थी।

इसी समय चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मगध पर चढ़ाई कर दी। युद्ध में धनानंद मारा गया। इस प्रकार मगध में मौर्य वंश की शुरुआत हुई।

महाजनपदों में जनजीवन

महाजनपदों में राजा बहुत शक्तिशाली होता था। वह अपने राज्य में शासन एवं न्याय करता था। अपनी सहायता के लिये वह मंत्री, सेनापति एवं अन्य कर्मचारियों की नियुक्ति करता था।

चित्र–5.2 महाजनपद काल के ठप्पे लगे आहत सिक्के

इस समय गाँवों में एक मुखिया होता था जो राजा एवं गांववासियों के बीच कड़ी का काम करता था। गाँवों के लोग मुख्यरुप से खेती एवं पशुपालन करते थे। जिन गाँवों में उद्योग–धंधे जैसे– शिल्पकारी, कारीगरी, धातुकर्म, बढ़ईगिरी एवं व्यापारी अधिक हुए वे गाँव धीरे–धीरे नगरों का रूप लेने लगे। इनमें से कई प्रसिद्ध नगर हुए – उज्जैन (मध्य प्रदेश में), चंपा, वैशाली, राजगृह (बिहार में), आदि। ये महानगर कहलाते थे। इन नगरों की खुदाई से पता चलता है कि यहाँ मकान लकड़ी, ईंट व पत्थरों से बनते थे। यहाँ तरह तरह की चीजें बनाने वाले कारीगर रहते थे। इन कारीगरों ने अपने अलग–अलग संगठन बना लिए थे, जिसे श्रेणी कहते थे। ये लोग अपनी श्रेणियों में रहकर साथ–साथ काम करते थे।

महाजनपद काल में व्यापार का भी खूब विकास हुआ। पहले वस्तुओं के बदले वस्तुओं से ही लेन–देन होता था। लेकिन इस काल में धातु (चाँदी एवं ताँबे) के सिक्कों का चलन शुरु हुआ। ये सिक्के धातु के टुकड़ों पर ठप्पा लगा कर बनाए जाते थे। ये आहत सिक्के कहलाते हैं। सिक्कों के चलन से व्यापार काफी सुगम हो गया।

इस समय सभी लोगों को कर देना पडता था। किसानों को अपनी उपज का छठवाँ हिस्सा कर के रुप में देना पड़ता था। शिल्पकारों को अपनी बनाई वस्तु के रुप में कर देना पड़ता था। व्यापारियों को भी वस्तु एवं नगद रुप में कर देना पड़ता था।

यह काल धार्मिक रुप से भी काफी बदलाव का काल था। इसके बारे में हम अगले पाठ में विस्तार से पढ़ेंगे।

क्या आज भी शिल्पकार व कारीगर संगठन बनाकर काम करते हैं?

महाजनपद काल में मगध साम्राज्य ने पूरे उत्तरी भारत में एक साम्राज्य स्थापित किया था। लेकिन

इसी समय पंजाब के क्षेत्र में कई छोटे–छोटे राज्य बने हुए थे। ईरान एवं यूनान के शासकों ने इन्हें हरा दिया।

सिकंदर

सिकंदर यूनान के मकदूनिया राज्य का राजा था। वह विश्व विजय करने निकला था और मध्य एशिया के राज्यों को जीतता हुआ 326 ई.पू. में उसने पंजाब के राज्यों पर आक्रमण किया। कुछ राज्यों को जीतने के बाद उसका सामना पंजाब के एक राजा पोरस से हुआ। कहा जाता है कि हारने के बाद जब राजा पोरस को सिकंदर के सामने लाया गया और सिकंदर ने उससे पूछा कि–आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए? तब पोरस ने उत्तर दिया– जैसे एक राजा दूसरे राजा के साथ व्यवहार करता है। पोरस के इस जवाब से सिकंदर बहुत प्रभावित हुआ और उससे मित्रता कर ली।

इसके बाद सिकंदर और आगे मगध की ओर बढ़ना चाहता था। लेकिन उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। इस प्रकार सिकंदर को लौटने के लिये विवश होना पड़ा।

सिकंदर के बाद यूनान और भारतीय राज्यों के बीच नए संबंध स्थापित हुए। भारतीय और यूनानी समाज के बीच विचारों का आदान–प्रदान शुरु हुआ तथा व्यापारिक संबंध भी स्थापित हुए। इसके अतिरिक्त भारत के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में यूनानी और ईरानी लोगों की बसाहट भी शुरु हुई। इन लोगों ने आगे चलकर भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) खाली स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. गणतंत्र में वास्तविक शासन एक ही ––––– के लोगों के हाथ में रहता था।
2. महाजनपद काल में मगध की राजधानी ––––– थी।
3. प्राचीन भारत में ––––– महाजनपद थे।
4. महाजनपद काल में ––––– प्रसिद्ध गणराज्य था।

HZ1Y9E

(ब) सही/गलत बताइए–

1. राजतंत्र में राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।
2. गणराज्यों में राजा का पद वंशानुगत होता था।
3. किसानों को अपनी उपज का एक भाग कर के रुप में देना पडता था।
4. सिकंदर ईरान का राजा था।

(स) प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. महाजनपद कितने वर्ष पहले को कहा गया है?
2. धनानन्द से प्रजा क्यों दुःखी थी?
3. महाजनपद कैसे बने ?
4. महाजनपदों में नगरों का विकास कैसे हुआ ?
5. महाजनपदों में करों का क्या महत्व था ?
6. राज्यों एवं गणराज्यों की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।
7. मगध को शक्तिशाली बनाने में बिंबिसार का क्या योगदान था ?

(द) गतिविधि–

अपने माता–पिता से पूछिए कि क्या वे कर देते हैं ? अगर हाँ तो कौन–कौन–से कर देते हैं ? वे कर वस्तु के रुप में देते हैं या नगद ?